# माननीय न्यायमूर्ति श्री पंकज मित्थल, मुख्य न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय द्वारा दिनांक 04.02.2023 को उच्चतम न्यायालय में नियुक्ति के अवसर पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिग के द्वारा उद्‌बोधन

1. वरिष्ठ न्यायमूर्ति श्री एम. एम. श्रीवास्तव जी,
2. मेरे सभी बंधुवर न्यायमूर्तिगण व स्नेहमयी न्यायमूर्तिगण बहने
3. श्री एम. एस. सिंघवी, एडवोकेट जनरल
4. श्री घनश्याम सिंह राठौड़, चैयरमेन, बार काउंसिल ऑफ राजस्थान
5. श्री नाथू सिंह राठौर, अध्यक्ष,
   राजस्थान उच्च न्यायालय एडवोकेट्स एसोसिएशन, जोधपुर
6. श्री रवि भंसाली, अध्यक्ष,
   राजस्थान उच्च न्यायालय लॉयर्स एसोसिएशन, जोधपुर
7. श्री महेन्द्र शांडिल्य, अध्यक्ष,
   राजस्थान उच्च न्यायालय बार एसोसिएशन, जयपुर
8. श्री कमल किशोर शर्मा,
   अध्यक्ष जयपुर बार ऐसोसिएशन, जयपुर
9. विद्वान वरिष्ठ अधिवक्तागण
10. बार के विद्वान सदस्यगण
11. रजिस्ट्री के अधिकारीगण और न्यायिक सेवा के सदस्यगण
12. देवियों और सज्जनों

:::::::::::::::

1. वीरभूमि व अपने रंगों से अनोखी छटा बिखेरने वाली राजस्थान की भूमि ने आन, बान और शान के साथ मुझे अपनाया और मुझे यहां कार्य करने का अवसर प्रदान किया। इसके लिए मैं हृद्‌य से राजस्थान वासियों का आभारी हूं।

2. मैंने अपने जीवन की यात्रा एक प्राचीन व ऐतिहासिक नगरी मेरठ से प्रारम्भ की थी और फिर तीर्थराज प्रयाग को अपनी कर्मभूमि बनाया। वहां से कुछ समय के लिए मुझे भगवान लक्ष्मण जी की बसाई हुई नगरी लखनऊ में कार्य करने का अनुभव प्राप्त हुआ। तत्पश्चात **'मां भारती'** के हिमकिरीट कहे जाने वाले प्रदेश जम्मू व कश्मीर में मां वैष्णो देवी के श्री चरणों में कुछ समय बैठने का भी अवसर मिला। गत साढ़े तीन महीने से मैं आपके साथ कार्यरत हूं और यह मेरा सौभाग्य

है कि मुझे राजधानी दिल्ली की ओर ले जाने में राजस्थान ने अहम भूमिका निभाई है या यूं कहूं कि यह श्रीनाथ जी की ही कृपा है कि उन्होंने मेरा मुख सर्वोच्च न्यायालय, दिल्ली की ओर मोड़ दिया है। मेरे पास राजस्थान की इस पवित्र भूमि की गुणगाथा को कहने के लिए शब्द नहीं है।

3. राजस्थान की भव्य जीवन्त संस्कृति ने मुझे अत्यन्त ही प्रभावित किया है। **''पधारो म्हारे देश''** अर्थात् हमारी धरती पर आपका स्वागत है और **''खम्मा घणी''** मारवाड़ी अभिवादन सबका मन मोह लेते हैं। यहां आने पर मुझे न केवल गुलाबी नगरी जयपुर से परिचित होने का सौभाग्य मिला, बल्कि साथ ही साथ सूर्य नगरी जोधपुर व उसके एक भाग नीली नगरी और उदयपुर जैसी श्वेत नगरी से परिचय प्राप्त हुआ। इसके साथ ही Yellow City जैसलमेर का भी अनूठा दर्शन मिला।

4. राजस्थान उच्च न्यायालय ने मुझे जो स्नेह और प्यार दिया, वह अद्‌भुत है। मुझे यहां आप सबके साथ कार्य करने में बहुत ही अच्छा अहसास हुआ। मैंने आप सबके साथ कदम–ताल मिलाकर चलने का प्रयास किया और मेरी विचार में यह प्रयास ही एक विकास है। मैं कहां तक इसमें सफल हुआ, यह मैं आप सब पर छोड़ता हूं।

5. अपने परिवार की परम्पराओं को निभाते हुए मैंने अपना कदम न्याय जगत में रखा। मैं अपने परिवार का तीसरी पीढ़ी का वकील बना और मैंने मन ना होते हुए भी इलाहाबाद उच्च न्यायालय में अपनी वकालत प्रारम्भ की। आज मेरा बेटा विनायक भी इसी पेशे में है और इलाहाबाद उच्च न्यायालय में विगत 6–7 वर्षों से कार्यरत है।

6. न्याय प्रदान करना एक दिव्य कार्य है। यह मेरा सौभाग्य ही है कि प्रभु ने मुझे इस कार्य के लिए चुना। इस दिव्य कार्य के लिए परिश्रम, न्यायिक ज्ञान, कर्मठता व सरल स्वभाव इत्यादि के साथ–साथ न्यायाधीश को सूर्य की भांति पल–पल, तिल–तिल जलना पड़ता है और फिर परोपकारिता की भावना से न्यायिक सेवा करनी पड़ती है। यह कठिन हो सकता है, परन्तु सतत अभ्यास व अनुभव के साथ यह बड़ी ही सरलता से किया भी जा सकता है।

7. अपने इस लघु काल में जोधपुर व जयपुर दोनों ही पीठों में अपने साथी न्यायाधिपतियों के साथ कार्य किया है। मुझे सभी अपने साथी न्यायाधिपतियों व

दोनों जगह के अधिवक्तागण से भरपूर सहयोग मिला, जिसके लिए मैं उन सबका जीवनपर्यन्त आभारी रहूंगा। उच्च न्यायालय की रजिस्ट्री व अन्य स्टाफ से भी मुझे पूरा सहयोग मिला, जो सराहनीय है। यहां की जनपद न्यायपालिका और न्यायिक अधिकारीगण भी बड़े कर्मठ व कार्यशील हैं। अगर तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाये, तो इस प्रदेश के न्यायिक अधिकारीगणों का कार्य, अन्य प्रदेशों के न्यायिक अधिकारीगण की तुलना में काफी भिन्न व अच्छा है। इन्हीं सबके अथक परिश्रम से व राजस्थान न्यायिक अकादमी के सहयोग से ही मेरे लिए राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी, West Zone Conference को सार्थकता से आयोजित करना सम्भव हो सका है। मैं सभी का आभारी हूं।

8. मेरे लिए यह भी सौभाग्य की बात है कि मेरे इस संक्षिप्त कार्यकाल के दौरान हाल ही में मुझे 09 नवनियुक्त न्यायाधीशों को राजस्थान उच्च न्यायालय में न्यायाधिपति के रूप में शपथ दिलाने का अवसर मिला और इससे निश्चित रूप से लम्बित प्रकरणों के निस्तारण में मदद मिलेगी।

9. राजस्थान बार काउंसिल भी बड़ी शांत व सहयोगी रही है और मुझे खुशी है कि मेरे कार्यकाल में जोधपुर में बार काउंसिल के भवन की नींव रखी गई है।

10. आज आपसे विदा लेते हुए मैं अपने व्यक्तिगत स्टाफ को विशेष रूप से धन्यवाद देता हूं और सभी के सुखद जीवन की आशा और कामना करता हूं।

11. मैं अपनी पत्नी, बेटे और बेटी व सभी पारिवारजनों द्वारा दिये गये सतत सहयोग की भी प्रशंसा करता हूं, जो हमेशा हर कार्य में मेरा हाथ बंटाते रहे और मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहे।

12. मेरा सर्वोच्च न्यायालय को प्रस्थान शायद ही मेरे लिए कोई उपलब्धि हो, बल्कि वास्तविकता में यह केवल आप सबका, मेरठ, इलाहाबाद व जम्मू–कश्मीर के साथियों की दुआओं व शुभकामनाओं का ही फल है कि ईश्वर ने आप सबकी सुनकर मुझ पर कृपा की है। मैं आप जैसे सभी अपने शुभचिंतकों का आभारी हूं कि आपके कारण मुझे आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ और मैं आगे भी जीवन में आप सबके सहयोग, शुभकामनाओं और आशीर्वाद की अपेक्षा रखता हूं।

13. न्याय प्रशासन में मेरे योगदान को दर्शाते हुए आप सभी ने मेरे प्रति अपने जिन उदारतापूर्ण विचारों व प्रसंशनीय शब्दों का प्रयोग किया है, उनको सुनकर मन प्रफुल्लित है, पर मुझे संदेह है कि क्या मैं इस प्रकार की सरहाना का हकदार हूं ? फिर भी मैं इसके लिए आप सभी का आभार व्यक्त करता हूं।

14. अपनी बात समाप्त करने से पहने मैं यहां कहना चाहूंगा कि कोई भी व्यक्ति परिपूर्ण नहीं होता है। मैं भी इसका अपवाद नहीं हूं। मेरे द्वारा कर्त्तव्यों के निर्वहन में हो सकता है कि किसी की भावनाओं को ठेस पंहुची हो, अगर ऐसा हुआ है, तो वो अनजाने में हुआ है और जानबूझकर नहीं किया गया है। मैं आपसे खुशी–खुशी विदा लेता हूं, मेरे मन में किसी के प्रति कोई दुर्भावना नहीं है। मन में केवल अच्छी यादों को संजोये हुए, खुशी से भरे दिल और इस न्यायालय के प्रति आभार की गहरी भावना के साथ आपसे विदा लेना चाहूंगा।

15. अंत में मैं अपनी गलतियों को नजरअंदाज करने की अपेक्षा रखते हुए इतना ही कहूंगा कि **''गुण तो न था कोई भी, अवगुण मेरा भुला देना।''**

धन्यवाद।

कल्याणमस्तु।

जय हिन्द।

पंकज मित्थल
मुख्य न्यायाधीश,
राजस्थान उच्च न्यायालय